वास्तुः किस्मत चमकाएंगे ये 10 पौधे

वास्तु शास्त्र के हिसाब से हर घर के लिए शुभ है। कुछ पेड़-पौधे लेकिन, कुछ पेड़-पौधे घर-आंगन में लगाना अशुभ फल भी देते हैं। अगर नए साल में भाग्य का साथ पाना है तो गुडलक लाने वाले इन पौधों को घर में लगाइए। आइए बताते हैं कि ये 10 पौधे कौन से हैं।

शुभ फल देता है अनार

घर की खूबसूरती और हरियाली बढ़ाने के साथ-साथ कई पेड़ शुभ फल देने वाले माने गए हैं। इनमें अनार का पौधा प्रमुख है। अनार का पौधा घर में लगाने से कर्जे से मुक्ति मिलती है। घर में समृद्धि आती है। यह पौधा घर में सकारात्मक ऊर्जा फैलाने वाला भी माना जाता है।

कृष्णकांता की बेल भरेगी तिजोरी

कृष्णकांता का बेल जिसमे नीले रंग के फूल होते हैं, इसे लक्ष्मी का स्वरुप मानते है। जिन लोगों को तरह तरह की आर्थिक परेशानियों ने घेर रखा है और उन्हें अपने श्रम के अनुरूप आर्थिक लाभ नहीं मिल रहा है, उन लोगों के लिए यह पौधा बेहद लाभकारी है। इसे लगाने से आर्थिक समस्याएं खत्म होती हैं।

नकात्मक ऊर्जा भगाएगी हल्दी

हल्दी का पौधा लगाने से घर में नेगेटिव एनर्जी नहीं होती है। इस पौधे का औरा वास्तु में सकारात्मक माना जाता है। ऐसी मान्यताहै कि घर में हल्दी का पौधा हो तो नकारात्मक शक्तियां खुद ब खुद किनारा कर लेती है। इसलिए इस पौधे को घर में अवश्य लगाना चाहिए।

सुख-समृद्धि का संवाहक है नारियल

नारियल का पौधा भी सुख-समृद्धि कारक माना जाता है। यही कारण है कि हिंदू परम्परा में हर पूजा, व्रत आदि में इसका उपयोग अवश्य किया जाता है। इसे देवों में भी काफी प्रिय माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि जिनके घर में नारियल के पेड़ लगे हों, उनके मान-सम्मान में खूब वृद्धि होती है।

खुशहाली के लिए घर में लगाएं तुलसी

हिन्दू धर्म में तुलसी के पौधे का खास महत्व है। तुलसी के पौधे को एक तरह से लक्ष्मी जी का रूप माना गया है। अगर आपके घर में किसी तरह की निगेटिव एनर्जी है, तो यह पौधा उसे नष्ट करने की ताकत रखता है, लेकिन ध्यान रखें कि तुलसी का पौधा घर के दक्षिणी भाग में नहीं लगाना चाहिए, क्योंकि यह आपको फायदे के बदले काफी नुकसान पहुंचा सकता है। तुलसी का पौधा घर में उत्तर, उत्तर-पूर्व या पूर्व दिशा में लगाया जाना चाहिए।

आम के पास लगाएं नीम और अशोक

ज्यादातर घरों में आम के पेड़ लगे होते हैं और लोग बड़े शौक से अलग-अलग तरह के आम का पेड़ लगाते हैं, लेकिन घर के आसपास लगा आम का पेड़ अच्छा नहीं माना जाता। घर के पास आम का पेड़ होना आपके बच्चों पर बुरा असर डालता है। ऐसे में खुद से आम का पौधा न लगाएं और अगर पहले से लगा हो तो उसके पास नारियल, नीम, अशोक आदि का पेड़ लगाकर इसकी नकारात्मकता को खत्म कर सकते हैं।

बेल वाले पौधे हैं लाभकारी

बेल या लताओं वाले पौधों को प्रवेश द्वार या

एक्सटीरियर स्पेस जैसे बालकनी में लगा सकते हैं। यह अपका मन अच्छा रखते हैं। इससे न केवल घर का माहौल अच्छा होता है बल्कि इससे घर में इससे सुख-समृद्धि भी आती है। लेकिन बेल वाले पौधे लगाते समय इस बात का ध्यान रखें कि लताएं कंपाउंड की दीवार से ऊंचे न चले जाएं।

बरगद का पौधा करता है वातावरण शुद्ध

बरगद और पीपल के पेड़ हिंदू धर्म में पवित्र माने जाते हैं। बरगद के पेड़ को घर में नहीं बल्कि मंदिर में लगाना चाहिए। बरगद का पेड़ अपने आस-पास के वातावरण को भी शुद्ध रखता है। कुछ लोग शौक में बरगद का बोंसाई लगाते हैं लेकिन इसे घर के अंदरूनी हिस्से के स्थान पर बाहरी स्थान पर लगाना चाहिए।

अशोक बढ़ाएगा बुद्धि और पैसा

कई बार ऐसा लगता है कि आपका बच्चा अपनी ओर से पूरी मेहनत करके भी बहुत अच्छे अंक नहीं ला पाता है। शार्प बुद्धि होने के बाद भी वह कई जगह मात खा जाता है। ऐसे में घर में लगाया जाना वाला अशोक का पौधा आपके बच्चे के बुद्धि के विकास के साथ ही घर में पैसा लाने वाला भी माना जाता है।

बीमारियां भगाएगा आंवला

आंवले का हिंदू धर्मशास्त्र के साथ ही आर्युवेद में भी काफी महत्वपूर्ण पौधा माना गया है। आंवले का फल स्वास्थ्य की दृष्टि से काफी अच्छा माना जाता है लेकिन आपको जानकर हैरत होगी कि आंवले का पौधा भी स्वास्थ्यकारक होता है। आंवले का पौधा घर में लगाने से घर में बीमारियां नहीं आती हैं।

पति-पत्नी का रिश्ता सुखमय बनाएगा गेंदा

गेंदा को बृहस्पति का प्रतीक माना जाता है। ऐसा मानते हैं कि घर में गेंदा का पौधा लगाने से आपका बृहस्पति मजबूत होता है और इसका सीधा असर आपके दांपत्य जीवन पर पड़ता है। इसे लगाने से पति-पत्नी के बीच होने वाले झगड़े कम हो जाते हैं और आपसी संबंध मधुर हो जाते हैं।

इसका भी रखें ध्यान

घर या गार्डन में पौधे हमेशा इवेन नंबर में लगाना चाहिए। कोई भी पौधा या बड़ा पेड़ आपके घर के सामने है तो उसे शुभ नहीं माना जाता है। घर में बोनसाई प्लांट्स नहीं लगाने चाहिए। ये घर के मालिक और बच्चों को नुकसान पहुंचाते हैं। जिन पौधों में मिल्क एक्सट्रेक्ट होता है वो घर में नहीं लगाने चाहिए। कैक्टस के पौधे को भी घर में लगाना वर्जित माना जाता है।

ऐसे बनाएं अपने दांपत्य जीवन को खुशहाल

शादी के बाद हर कोई चाहता है कि उसका वैवाहिक जीवन खुशहाल रहे। हालांकि वे यह नहीं समझ पाते कि इस रिश्ते में हमेशा मधुरता कैसे कायम रखी जाए। रिलेशनशिप एक्सपर्ट्स का कहना है कि वैवाहिक जीवन में मधुरता बनाए रखने के लिए सबसे जरूरी है कि पति-पत्नी अपने रिश्ते में कभी भी अहंकार न आने दें और न ही कभी एक-दूसरे को कमतर दिखाने की कोशिश करें।

साथी हाथ बढ़ाना

यदि संभव हो तो घर के कामकाज में प्रतिदिन अपने साथी का हाथ बंटाएं। इससे काम जल्दी और आसानी से तो होता ही है। साथ ही प्यार भी गहरा होता है। यदि आप बहुत व्यस्त रहते हैं और आपके पास इतना समय नहीं होता कि खाना बनाने में पत्नी की मदद कर पाएं तो कोई बात नहीं। छुट्टी के दिन सब्जी काटने या सलाद बनाने में तो पत्नी की हेल्प कर ही सकते हैं। इसके अलावा जब भी आपको मौका मिले, पत्नी के लिए एक कप गरमागरम चाय या कॉफी बनाकर दें। इससे आपका साथी के चेहरे पर कितनी मुस्कान आती है, इतना करके तो देखिए।

संपर्क बनाए रखिए

आप चाहे घर में हों या कार्यस्थल पर या फिर शहर से बाहर, दिन में कम से कम एक बार अपने साथी बात अवश्य करें। अपने पार्टनर से बात करके यह जानने की कोशिश करें कि उसका दिन कैसा गुजरा, वह ठीक तो है। उसके मन में कहीं उदासी का भाव तो नहीं पनप रहा है। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि छोटी-छोटी बातें करते रहने से रिश्ते में आत्मीयता बनी रहती है। कई बार तो बड़ी से बड़ी समस्या का हल भी आपसी बातचीत से निकल आता है।

सकारात्मक नजरिया

अगर आपकी नजर हमेशा अपने साथी के गलत कामों पर रहेगी तो यकीन मानिए आपको कुछ न कुछ गलती मिलती ही रहेगी। धीरे-धीरे आपके मन में साथी के प्रति असंतोष घर करता जाएगा। इसके विपरीत जब आप अच्छी बातों पर गौर करते हैं तो आपको केवल अच्छाई ही दिखाई देगी। मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि आप क्या देखना पसंद करते हैं, यह पूरी तरह आप पर निर्भर करता है। सफल पति-पत्नी हमेशा सकारात्मक नजरिया रखते हैं और वे एक-दूसरे की अच्छी बातों पर ही गौर करते हैं। इसलिए हमेशा सकारात्मक नजरिया ही रखें। इससे दांपत्य जीवन में मजबूती आएगी।

एक-दूसरे पर विश्वास

दांपत्य जीवन सुखमय हो, इसके लिए जरूरी है कि अपने पार्टनर पर विश्वास बनाए रखा जाए। विश्वास जीवन के मुश्किल हालात से भी निपटने में सक्षम बनाता है। आमतौर पर जरा सी परेशानी आने पर लोग एक-दूसरे पर दोष मढ़ने लगते हैं। उनको लगता है कि एक-दूसरे पर दोष मढ़कर अपने दायित्व से छुट्टी मिल जाएगी। यह प्रवृत्ति ठीक नहीं है। इससे हमेशा बचने की कोशिश करनी चाहिए।

रुखी त्वचा के लिए होममेड फेस पैक

हर किसी की आस होती है कि उसकी त्वचा नेचुरली रूप से खूबसूरत दिखे और इसके लिए लोग पार्लर जाकर कई तरह के टीटमेंट भी करवाते हैं, लेकिन वास्तव में आपको वह परिणाम प्राप्त नहीं होते, जिनकी आपको चाहत होती है। तो चलिए आज हम आपको ऐसे कुछ होममेड फेस पैक्स बताते हैं, जिन्हें लगाकर आप सर्दी के मौसम में अपनी डाई स्किन को तो नमी प्रदान कर ही सकते हैं, साथ ही इससे आपकी स्किन पर नेचुरल ग्लो भी आता है-

पपीते का प्रयोग : सर्दी के मौसम में पपीते की मदद से एक बेहतरीन फेस पैक बनाया जा सकता है। हालांकि इसके लिए, आपको पपीते के पल्प के साथ-साथ ओटमील, नींबू का रस और एग व्हाइट की भी आवश्यकता पड़ेगी। इसे बनाने के लिए आप इन सभी चीजों को आपस में मिलाकर एक पेस्ट बनाएं और उसे अपने चेहरे के साथ-साथ गर्दन और हाथों पर लगाकर करीबन 20 मिनट के लिए यूं ही छोड दें। बाद में आप इसे पानी की मदद से साफ कर लें। इससे आपको एक ग्लोइंग स्किन प्राप्त होगी।

गाजर और शहद : ठंड मे मौसम में गाजर की मदद से फेस पैक बनाना भी एक अच्छा आइडिया हो सकता है। इस पैक में शहद और गाजर मिलकर एक सुपर हाइडेटिड पैक बन जाता है। इसके लिए आप दो चम्मच गाजर के रस में एक चम्मच शहद मिलाएं और अपनी स्किन पर लगाकर करीबन 15 मिनट तक मसाज करें। बाद में इसे दस मिनट के लिए यूं ही छोड़ दें और फिर अपने चेहरे को धो दें।

केला और दूध : केले को लोग पावरहाउस के नाम से जानते हैं, लेकिन इसकी मदद से बनाए गए फेस पैक से आपको नमी और पोषण दोनों ही प्राप्त होते हैं। ठंड के मौसम में इससे बेहतर फेस पैक हो ही नहीं सकता। इसे बनाने के लिए आप मैश्ड बनाना में थोड़ा सा दूध डालकर एक थिक पेस्ट बनाएं और अपनी स्किन पर लगाएं। करीबन 20 मिनट लगाने के बाद आप अपना चेहरा धो दें। यह पैक खासतौर से रूखी त्वचा के लिए है। अगर आपकी स्किन ऑयली या कॉम्बिनेशन है तो आप दूध के स्थान पर गुलाबजल का प्रयोग करें।

ओटमील और मिल्क : इस फेस पैक को बनाने के लिए आप एक चम्मच ओटमील को एक चम्मच दूध में सोक करके रखें। बाद में इसे सर्कुलर मोशन में अपनी स्किन पर लगाते हुए 15 मिनट के लिए यूं ही छोड दें। यह फेस पैक एक स्क्रब की तरह भी काम करता है।

केला और नारियल तेल : आप केले को मैश करके उसमें एक चम्मच नारियल तेल मिलाएं और अपने चेहरे पर करीबन आधा घंटा लगा रहने दें। इसके बाद आप केले और नारियल तेल के इस फेस पैक को साफ कर लें। यह फेस पैक डाई स्किन के लिए काफी अच्छा रहता है।

लद्दाख में देखने के लिए बहुत कुछ है

तीनों रंगों की धरती लद्दाख अपने आप में अनेकों रहस्यों को समेटे हुए है। आकाश से इस पर अगर एक नजर दौड़ाई जाए तो मिट्टी रंग की जमीन में सफेद चादर बर्फ की देख आनंदित हुए बिना नहीं रहा जा सकता। जबकि घाटी में सफेद बर्फ से ढंके इन पहाड़ों की परछाईयां भी भयानक और खूबसूरत काली जमीन को प्रस्तुत करती हैं। और ज्यों ज्यों आदमी धरती की ओर लौटता है तो उसे यह धरती और भी खूबसूरत नजर आने लगती है जहां फूलों की घाटियों के साथ-साथ लामाओं की कतारें देख लगता है जैसे आदमी किसी परिलोक में आ गया हो।

लद्दाख आरंभ से ही इतिहास के पृष्ठों में रहस्यों से भरी भूमि के रूप में जाना जाता रहा है। कहा जाता है कि एक चीनी यात्री फा-हेयन द्वारा 399 एडी में इस प्रदेश की यात्रा करने से पहले तक यह धरती रहस्यों की धरती थी और इसे दर्रों की भूमि के रूप में भी जाना जाता है तभी इसका नाम 'ला' और 'द्गास' के मिश्रण से लद्दाख पड़ा है जो समुद्रतल से 3500 मीटर की ऊंचाई पर स्थित और करीब 97000 वर्ग किमी के क्षेत्रफल में फैला होने के कारण राज्य का सबसे बड़ा प्रदेश है।

जम्मू कश्मीर का सबसे बड़ा प्रदेश होने के साथ साथ लद्दाख विशिष्टताओं के कारण देशी-विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है। अनेक जातियों, संस्कृतियों व भाषाओं का संगम बना यह प्रदेश एक खूबसूरत पर्यटन स्थल भी है। जो एक ओर पाकिस्तान तो दूसरी ओर चीन से घिरा हुआ है। लद्दाख के पर्वत पर्वतारोहण करने वालों के मध्य काफी लोकप्रिय हैं।

कब जाएं : हमेशा बर्फ से ढके रहने के कारण लद्दाख के अधिकतर भाग कई कई महीने समस्त विश्व से कटे रहते हैं लेकिन फिर भी मई से लेकर नवम्बर तक का मौसम इस क्षेत्र में जाने का सबसे अच्छा समय है।

कैसे जाएं : वायुमार्ग-जम्मू, चंडीगढ़, दिल्ली, श्रीनगर से लेह के लिए इंडियन एयरलाइंस की सीधी उड़ानें हैं। लेह शहर में आपको टैक्सी, जीपें तथा जोंगा को किराए पर लेना पड़ता है। यह स्थानीय ट्रांसपोर्ट तथा बाहरी क्षेत्रों में जाने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं।

रेल मार्ग: सबसे निकटतम रेलवे स्टेशन जम्मू है जो 690 किमी दूर है। और जम्मू रेलवे स्टेशन देश के प्रत्येक भाग से रेल द्वारा जुड़ा हुआ है।

सड़क मार्ग: लेह तक पहुंचने के लिए, जम्मू-श्रीनगर-लेह राष्ट्रीय राजमार्ग है जिसमें सबसे ऊंचा दर्रा 13479 फुट की ऊंचाई पर फोतुला है। लेह से श्रीनगर 434 किमी, करगिल 230 किमी तथा जम्मू 690 किमी दूर है।

क्या देखें : लेह अपने बौद्ध मंदिरों तथा मठों के लिए प्रसिद्ध है। जो पूरे लेह में स्थान स्थान पर कुकुरमुतों की तरह दिखते हैं। असल में यह बौद्ध मंदिर पुराने धार्मिक दस्तावेजों तथा चित्रों को सुरक्षित रखने के स्थान हैं। जो आज भी अपनी ओर सबको आकर्षित करते हैं।

लेह महल : इस महल का निर्माण सिंगे नामग्यान ने 16वीं शताब्दी में करवाया था। यह महल शहर के बीचों बीच खड़ा हर आने जाने वाले को अपनी ओर आकर्षित करता तो है ही साथ ही में अपनी कला और भगवान बुद्ध के जीवन को जीवंत रूप से चित्रित करती पेंटिंग्स इसकी खासियत हैं।

नामग्याल तेस्मो : लेह शहर जो एक घाटी में स्थित है इसके कारण और खूबसूरत नजर आता है जो कस्बे तथा लेह महल पर अपना प्रभाव छोड़ता है। यह पवित्र राजा का प्रभाव भी दिखाता है। इस मठ में भगवान बुद्ध की एकमूर्ति, दीवार की पेंटिंग्स, पुराने दस्तावेज तथा अन्य एतिहासिक और धार्मिक वस्तुएं रखी गई हैं।

लेह मस्जिद : इसका निर्माण 17वीं सदी में देलदन नामग्यान ने किया था जो अपनी मुस्लिम मां के प्रति एक श्रद्धांजलि थी। तुर्क और इरानी कलाकृति को अपने आप में समेटने वाली यह मस्जिद आज भी मुख्य बाजार में यथावत अपने स्थान पर है।

स्टाक पैलेस म्यूजियम : लेह कस्बे से 17 किमी दूर स्टाक में स्थित इस संग्रहालय में कीमती पत्थर, थंका (लद्दाखी चित्र), पुराने सिक्के, शाही मुकुट तथा अन्य शाही वस्तुएं रखी गई हैं। यह संग्रहालय सुबह सात बजे से शाम 6 बजे तक खुला रहता है।

गोम्पा तेस्मो : लेह महल के पास ही स्थित यह गोम्पा भगवान बुद्ध की डबल स्टोरी मूर्ति के लिए जाना जाता है जिसमें भगवान बुद्ध को बैठी हुई मुद्रा में दिखाया गया है। यह भी शाही मठ है।

इसके अतिरिक्त लेह के आसपास आलचरी गोम्पा, चोगमलसार, हेमिस गोम्पा, लामायारू, लीकिर गोम्पा, फियांग गोम्पा, शंकर गोम्पा, शे मठ तथा महल, स्पीतुक मठ, स्तकना बौद्ध मंदिर, थिकसे मठ तथा हेमिस नेशनल पार्क भी देखने योग्य हैं जिनको देखने के लिए ही लोग इस कस्बे में आते हैं जो लेह कस्बे से 2 किमी से 60 किमी की दूरी तक हैं।

उत्सव

हेमिस उत्सव : यह जून में मनाया जाता है। यह प्रत्येक वर्ष गुरु पद्मसंभवा, जिनके प्रति लोगों का मानना है कि उन्होंने स्थानीय लोगों को बचाने के लिए दुष्टों से युद्ध किया था, की याद में मनाया जाता है। इस उत्सव की सबसे खास बात मुखोटा नृत्य है जिसे देखने के लिए देश-विदेश से कई लाख लोग आते हैं।

लोसर : यह प्रति वर्ष बौद्ध वर्ष के ग्यारहवें महीने में मनाया जाता है। यह 15वीं सदी से मनाया जाता है। इसको मनाने के पीछे यही सोच होती है कि युद्ध से पूर्व इसे इसलिए मनाया जाता था क्योंकि न जाने कोई युद्ध में जीवित बचेगा भी या नहीं।

लद्दाख उत्सव : यह प्रत्येक वर्ष अगस्त में मनाया जाता है और इसका आयोजन पर्यटन विभाग की ओर से किया जाता है। इसके दौरान विभिन्न बौद्ध मठों में होने वाले धार्मिक उत्सवों का आनंद पर्यटक उठाते हैं।

करगिल : लद्दाख क्षेत्र का सबसे बड़ा और दूसरा कस्बा करगिल है जो श्रीनगर-लेह राष्ट्रीय राजमार्ग के बीच आता है जहां पर दरास, सुरू घाटी, रंगदुम, मुलबेक, जंस्कार, करशा, बुरदान, फुगताल, जोंगखुल आदि स्थान देखने योग्य हैं जो अपनी खूबसूती के लिए प्रसिद्ध हैं।